1

3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. तक (सिन्धुघाटी सभ्यता से मौर्य वंशावली तक) कला एवं हस्तकला की धीरे–धीरे प्रगति होती रही है। हड़प्पन युग में उच्च कोटि के कलाकार थे। मौर्य युग के कलाकारों ने भारतीय कला के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया था। अशोक युग में कला के उच्च स्तरीय नमूने के स्तम्भ भारतीय कला की विशाल धरोहर हैं। उस युग में तकनीकी द ष्टि से उच्च स्तरीय कला के साथ–साथ आम व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्ति की प्रथा एवं कला की अभिव्यक्ति के नमूने देवी की विभिन्न मूर्तियों के रूप में उपलब्ध हैं। मौर्य वंशीय राजाओं के उपरान्त जब सांगा वंशियों ने राजकीय शक्ति ग्रहण की तो उसी वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण मध्य प्रदेश स्थित **सांची** में देखने को मिलते हैं। देश के बाहर से आए हुए कुषाण शासकों ने कला की प्रगति में बड़ा सहयोग दिया। इसी युग में पहली बार वास्तुकला में प्रतिमाओं के निर्माण कार्य की प्रगति देखी गई। भारतीय कला के इतिहास में गुप्तकालीन युग को **'स्वर्ण युग'** कहा जाता है। इसी युग में मानवीय आकृतियों के प्रस्तुतीकरण में सुधार हुआ। मथुरा, सारनाथ, उज्जैन, अहिछत्र तथा कुछ अन्य नगर इस युग (गुप्तकालीन युग) में कला के मुख्य कला–केन्द्रों के रूप में जाने जाते थे। गुप्तकालीन वास्तुकला के नमूनों में कला, निपुणता, पूर्णता तथा कल्पना की शक्ति का अपूर्व मिश्रण देखने को मिलता है।

धार्मिक कलाओं में दैवीय गुण देखने को मिलते हैं। गुप्तकालीन कला के प्रमुख गुणों में होंठों का थोड़ा–सा टेढ़ापन, मूर्ति की आकृति में गोलाई, लकड़ी पर की गई खुदाई तथा सरलता प्रमुख हैं, जो उस युग की विशेष पहचान बन गईं। धार्मिक मूर्तियों के साथ–साथ धर्मनिरपेक्ष कलाकृतियाँ भी काफी संख्या में बनाई गईं। इसी युग में **अजंता** के प्रसिद्ध चित्र बनाए गए थे। चित्रों तथा मूर्तियों के अतिरिक्त गुफाओं तथा मन्दिर वास्तुकला में काफी उन्नति हुई जो मध्य प्रदेश की उदयगिरि गुफाओं तथा नाचना व भूमरा में देखने को मिलती हैं। वस्तुतः गुफाओं तथा मन्दिर वास्तुकला का प्रारम्भ एवं उत्थान इसी काल में देखने को मिलता है। संक्षेप में, गुप्तकाल भारतीय इतिहास का प्रतिष्ठित युग माना जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- 3000 ई.पू. से 600 ईस्वी के दौरान कला के इतिहास का वर्णन कर सकेंगे;
- इस युग में कला के नमूनों तथा अन्य उदाहरणों का विवरण दे सकेंगे;

न त्य करती हुई लड़की

- कलाकारों द्वारा प्रयुक्त सामान, आकार, विभिन्न रंग एवं स्थानों को सम्मिलित करके कलाकृतियों के प्रकारों की सूची बना सकेंगे;
- इस युग में निर्मित कलाकृतियों को स्पष्ट रूप से उनके नाम से पहचान सकेंगे;
- इस युग में बनी कलाकृतियों और उनकी विशेषताओं को पहचान कर उनमें अंतर बता सकेंगे।

1.1 न त्यांगना/न त्य करती हुई लड़की

शीर्षक	:	न त्यांगना
माध्यम	:	मैटल (धातु)
समय (युग)	:	हड़प्पन काल (2500 BC)
स्थान	:	मोहनजो–दाड़ो
आकार	:	लगभग 4 इन्च
कलाकार	:	अज्ञात
संकलन	:	भारतीय संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

यह मूर्ति धातु की बनी है तथा सम्भवतः सिन्धु घाटी के कलाकारों की कलात्मकता और तकनीकी कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस नई आकृति में धातु पर की गई कलाकारी तकनीकी कौशल का विशेष नमूना है। यह मूर्ति देखने में काफी पतली एवं लम्बी है तथा इसमें एक लयात्मकता है। इस वास्तुकला में कुछ दर्शनीय बातें नजर आती हैं। प्रथम, जहां इसे निःवस्त्र दिखाया गया है, वहीं उसके बाएं हाथ में लगभग कन्धों तक चूड़ियाँ पहनी हुई दिखाई गई हैं, ठीक उसी तरह जैसे हम गुजरात और राजस्थान के क्षेत्रों में आजकल के आदिवासी लोगों को देखते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण आकर्षण उनका केश विन्यास है। अन्य देवियों की छोटे कद की मूर्तियों में सजाए गए बालों का विन्यास विलक्षण है। ये मूर्तियाँ इसी सभ्यता की देन हैं। इस मूर्ति में **समकालीन** शैली की झलक है। जूड़े के तौर पर उनके बाल बाँधे गए हैं। इसके खड़े होने या बैठने का तरीका दर्शनीय है। यह अपनी कमर पर दायाँ हाथ रखकर तथा बायाँ हाथ अपनी जाँघ पर रखकर लेटे रहने की मुद्रा में है। मूर्ति जिस प्रकार गढ़ी/ढली है, वह अपने आप में पूर्ण है। यह मूर्ति उस युग में कलाकार की धातु पर कलाकृति बनाने के गुण को स्पष्ट करती है। वास्तुकला के क्षेत्र में उच्च स्तरीय कला का प्रदर्शन हुआ है। इसका अर्थ है कि यद्यपि मूर्ति की ऊँचाई लगभग 4 इन्च ही है, तो भी यह देखने में बड़ी लगती है। मूर्ति का यह आकर्षण अपने में विशिष्टता लिए हुए है। इस 'नाचती' लड़की की मूर्ति में कलाकार द्वारा कला की कलात्मक विशेषताओं का मिश्रण बहुत ही कुशलता से किया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.1

क) 'नाचती लड़की' की धातु मूर्ति हमें कहाँ से प्राप्त हुई है?

ख) इसकी ऊँचाई क्या है?

ग) 'नाचती लड़की' क्या खड़ी अथवा बैठी हुई है?

रामपुरवा बुल कैपिटल

घ) 'नाचती लड़की' ने क्या परिधान पहन रखा है?

ङ) 'नाचती लड़की' की मूर्ति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता क्या है?

च) 'नाचती लड़की' का केश–विन्यास कैसा है?

1.2 रामपुरवा बुल कैपिटल (RAMPURVA BULL CAPITAL)

शीर्षक	:	रामपुरवा बुल कैपिटल
माध्यम	:	पॉलिश किया हुआ बालुका पत्थर
समय (युग)	:	मौर्यकाल – ईसा पूर्व तीसरी सदी
प्राप्ति स्थान	:	रामपुरवा
आकार	:	लगभग 7 फीट
कलाकार	:	अज्ञात
संकलन	:	भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

सामान्य विवरण

सम्राट अशोक ने राजकीय आज्ञाओं (राजाज्ञाओं) तथा भगवान बुद्ध के सद्‌वचनों को स्तंभों, चट्टानों तथा पत्थरों के टुकड़ों पर खुदवाए थे। अशोक के स्तंभ भारत के प्रत्येक क्षेत्र में, सिवाय सुदूर दक्षिण क्षेत्र में, पाए जाते हैं। उनके स्तंभों के तीन हिस्से थे: पहला तो आधार होता था जो एक बढ़े हुए तीर (दणु) की भाँति हुआ करता था। दूसरा हिस्सा स्तंभ का सजा हुआ शीर्ष स्थान होता था। उस हिस्से को 'शीर्ष' कहा जाता था। शीर्षो में अधिकांशतः एक या अधिक पशुओं की आकृतियाँ उलटे कमल के साथ खुदी होती थीं। ये कमल इन पशुओं की आकृतियों के लिए एक आधार का कार्य करते थे।

पशुओं की आकृति एवं कमल के बीच **शीर्ष फलक** (Abacus) कही जाने वाली काफी मोटी आकृति को घुसा दिया जाता था। अशोक के काल में जितने भी शीर्ष बने हैं, उनमें सांड़ का शीर्ष सबसे प्रसिद्ध है। इसे रामपुरवा बुल कैपिटल (बैल का शीर्ष) के नाम से जाना जाता है। इसका नाम उसके उपलब्ध होने के स्थान के आधार पर प्रचलित हुआ। इस शीर्ष का आधार एक घण्टी के आकार के उलटे कमल से बना है। उसके बाद शीर्षफलक (Abacus) तथा शीर्ष पर राजकीय बैल का सिर रखा होता था। शीर्षफलक के चारों ओर पेड़–पौधों की चित्रकारी होती है। जानकारों के मतानुसार इसकी प्रेरणा मध्य पूर्व या ग्रीक प्रणाली से प्राप्त हुई होगी। यह रूपरेखा बहुत ही सूक्ष्मता तथा विशुद्धता से की गई नक्काशी का उदाहरण है। कमल तथा शीर्षफलक के ऊपर बैल की आकृति हावी होती दिखाई देती है। यद्यपि चार टांगों के बीच के पत्थर के टुकड़े को नहीं खोदा जाता है तथापि बैल की सुन्दरता या शक्ति पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बैल (पशु) की शक्ति तथा उसके भारी–भरकम होने को अनुभव किया जा सकता है और इसी में कलाकार की सफलता निहित है। वस्तुतः आधार कमल तथा शीर्षफलक की सजावटी विशेषता से बैल की सामान्य प्रस्तुति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

बैल पर की गई खुदाई स्पष्टतः भारतीय मूर्तिकारों की कला की उत्कृष्टता को दर्शाती है। बैल के शीर्ष की अति–विशेषता उस पर की गई पॉलिश की चमक है। अशोक युग से मौर्य युग के मूर्तिकारों की यही सर्वप्रमुख विशेषता रही है। एक विद्वान के अनुसार अच्छी पॉलिश करने की यह योग्यता मध्य–पूर्व के मूर्तिकारों से सीखी गई है।

अश्वेत राजकुमारी

पाठगत प्रश्न 1.2

क) बैल का शीर्ष कहाँ मिला?

ख) बैल के शीर्ष का आधार कैसा है?

ग) बैल के शीर्ष के शीर्षफलक पर क्या रखा गया है?

घ) अब बैल का शीर्ष कहाँ है?

ङ) बैल के शीर्ष की अति–विशेषता क्या है?

1.3 अश्वेत राजकुमारी (Black Princess)

शीर्षक	:	अश्वेत राजकुमारी
माध्यम	:	भित्ति–चित्र
समय	:	दूसरी शताब्दी (AD) से छठी शताब्दी (AD) (गुप्त–बाकाटक का काल)
उपलब्धि स्थान	:	अजन्ता
आकार	:	20 फीट x 6 फीट (लगभग)
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के निकट अजन्ता गुफाएँ हैं। इन गुफाओं का नामकरण पास ही के गाँव 'अजिन्त' से पड़ा। पूर्ण एवं अपूर्ण गुफाएँ कुल मिलाकर 30 हैं। इन गुफाओं में से कुछ गुफाओं का उपयोग पूजा के स्थान (चैरयों) तथा उनमें से अधिकांश मठों (विहारों) के रूप में होते रहे। अजन्ता की कलाकृतियाँ दो चरणों में पूरी हुईं। प्रथम **हीनयान** चरण में हुई जिसमें भगवान बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है। और दूसरा चरण **महायान** का है, जिसमें भगवान बुद्ध को मानवीय रूप में दिखाया गया है।

अधिकांश अजन्ता भित्ति–चित्र वाकाटक काल में बने। भारतीय चित्रकला के इतिहास में अजन्ता चित्रों का एक अभूतपूर्व स्थान है। ये अजन्ता के भित्ति–चित्र **फ्रैस्को पद्धति** से नहीं बनाए गए हैं। फ्रैस्को एक रूसी पद्धति है जिसमें रंगों को पानी के साथ मिश्रित किया जाता है जिससे वे बंध सकें तथा उन रंगों से सूखे या गीले प्लास्टर पर चित्रकारी की जाती है। परन्तु अजन्ता के चित्रकारों (कलाकारों) ने परम्परावादी **टैम्परा पद्धति** का प्रयोग किया है। अजन्ता के भित्ति–चित्रों का विषय मूलरूप से धार्मिक था। इसके साथ–साथ कलाकारों (चित्रकारों) को अपनी रचनात्मक एवं कल्पनात्मक कला के प्रदर्शन की अनुमति भी थी। इसके लिए उन्हें पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए। इन भित्ति–चित्रों की विशेषता यह भी है कि धार्मिक विषयों से संबद्ध चित्रों को साधारण जन भी देखकर आनन्दित हो सकता है। अजन्ता चित्रों में अश्वेत राजकुमारी (Black Princess) सर्वोत्तम कृति मानी जाती है। इन चित्रों में स्वतन्त्र रेखाओं का प्रयोग तथा कलाकार की कला के द्वारा प्रदर्शित अंगों का गूढ़ सामन्जस्य, चेहरे का थोड़ा–सा तिरछापन एवं आंखों की नक्काशी–सभी कुछ कलाकारों की सिद्धहस्तता के नमूने हैं तथा अपनी तूलिका पर कलाकार का नियन्त्रण दर्शाते हैं। यहाँ तक कि जो चित्र क्षतिग्रस्त हो गए हैं, वे भी रंगों का सौंदर्य प्रस्तुत करते हैं। चित्रों में संगीत की गीतात्मकता का अनुभव होता है। शरीर

के अंगों की परिरेखाएं तथा उनकी कोमलता, गर्दन का सूक्ष्म झुकाव तथा सरलता चित्रों में एक दिव्य विशेषता झलकाती हैं। जिन रंगों का प्रयोग किया गया है, वे अत्यन्त सहज हैं तथा उनमें चटकीलेपन का अभाव है।

पाठगत प्रश्न 1.3

क) अजन्ता की गुफाएँ कहाँ हैं?

ख) किस चरण में भगवान बुद्ध को प्रतीक रूप में दिखाया गया है?

ग) अश्वेत राजकुमारी में किस प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया है?

घ) अजन्ता चित्रों के किस चरण में अश्वेत राजकुमारी को बनाया गया?

ङ) अश्वेत राजकुमारी किस युग की कृति है?

आपने क्या सीखा

सिन्धु घाटी की सभ्यता का नाम उस स्थान से संबंधित है जहाँ इस सभ्यता के प्राथमिक प्रमाण मिले। इस सभ्यता के मुख्य स्थान मोहनजो–दाड़ो तथा हड़प्पा हैं, जो अब पाकिस्तान में हैं। मूलतः इस सभ्यता को पहले सिन्धु नदी की घाटी तक सीमित रखा गया और इसीलिए इसका यह नाम रखा गया। परन्तु हाल ही की खुदाई से पता चलता है कि यह सभ्यता इस नदी की घाटी के परे तक फैली हुई थी। इस सभ्यता को **हड़प्पन सभ्यता** के नाम से भी जाना जाता है तथा यह माना जाता है कि यह सभ्यता 2500 ई.पू. तथा 1750 ई.पू. के मध्य पनपी। इसी युग (समय) के दौरान बहुत–सी कलाकृतियां तथा पुरातनिक अवशेष पाए गए हैं जिनमें मोहरें (मुद्राएं), चीनी मिट्टी का सामान, जेवर (आभूषण), औज़ार, खिलौने, लघु प्रतिमाएं तथा अन्य उपयोगी वस्तुएं शामिल हैं।

भारतीय इतिहास में मौर्य वंशावली का राज्यकाल काफी महत्वपूर्ण है। इस राजवंश की स्थापना **चन्द्रगुप्त मौर्य** ने की थी। यद्यपि **चन्द्रगुप्त मौर्य** अपने कुशल शासन तथा कौटिल्य उर्फ **चाणक्य** के कारण एक ख्यातिप्राप्त शासक बना, उसके पौत्र **अशोक** महान ने बहुत–से जनहित के कार्य किए तथा कला एवं वास्तुकला के उत्थान के लिए भी बड़ा योगदान दिया। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था और भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के प्रचार एवं प्रसार के लिए उसने पूरे साम्राज्य में स्तंभों एवं शिलालेखों को स्थापित किया।

मौर्यकाल के बाद **सांगा, सातवाहनों** तथा **कुषाणों** का शासन प्रारम्भ हुआ। कुषाण भारत के बाहर से आए थे परन्तु उन्होंने भारतीय कला एवं वास्तुकला के उत्थान के लिए प्रयास किए।

कुषाणों के बाद **चन्द्रगुप्त प्रथम** के द्वारा स्थापित गुप्त वंशावली के शासक सत्ता में आए। गुप्त वंश के शासक एक अच्छे शासक तथा शौर्य वीर ही नहीं थे, बल्कि विभिन्न कलाओं के संरक्षक भी थे। उन शासकों के शासन के दौरान हर क्षेत्र में प्रगति हुई। इनके शासन युग में विभिन्न प्रकार की कला तथा विज्ञान की बहुत प्रगति हुई। इसी युग में कालिदास जैसे महान शीर्ष स्तर के कवि का आविर्भाव हुआ। इसी युग में **आर्यभट्ट** तथा **वराहमिहिर** जैसे गणितज्ञ और वैज्ञानिक भी हुए। **इसी आधार में गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जाता है।**

पाठांत अभ्यास

1. सिंधु घाटी सभ्यता के कार्यों को संक्षेप में लिखिए।
2. 'नाचती लड़की' की भाव भंगिमा का वर्णन संक्षेप में कीजिए।
3. मौर्य युगीन कला के विषय में संक्षेप में लिखिए।
4. गुप्त युग को भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अथवा प्रतिष्ठित युग क्यों कहा जाता है?
5. मौर्य युगीन मूर्तिकला की क्या विशेषताएं हैं?
6. कुषाणों का क्या योगदान था?
7. गुप्तकालीन चित्रों की क्या विशेषताएं हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 (क) मोहनजो–दाड़ो

(ख) लगभग 4 इंच

(ग) खड़ी हुई

(घ) वह निःवस्त्र थी

(ङ) कलाकार द्वारा कला की कलात्मक विशेषताओं का मिश्रण कुशलता के साथ हुआ है।

(च) एक जूड़े के रूप में बंधी हुई है।

1.2 (क) रामपुरवा में

(ख) घण्टी की आकृति में उल्टा कमल है।

(ग) सिर

(घ) भारतीय संग्रहालय में

(ङ) मूर्तियों पर की गई पॉलिश की चमक।

1.3 (क) महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट

(ख) हीनयान चरण

(ग) प थ्वी के रंग/(सहज रंग)

(घ) महायान चरण

(ङ) दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी गुप्त–बाकाटक काल